अरूणिमा सिन्हा (Arunima Sinha) : हिम्मत और साहस की प्रेरणादायक कहानी

भारत की बहादुर बेटी **अरूणिमा सिन्हा** का जन्म उत्तर प्रदेश में एक साधारण परिवार में हुआ था। बचपन से ही वे खेलों में बहुत रुचि रखती थीं। उनका सपना था कि वे देश के लिए कुछ बड़ा करें। वे वॉलीबॉल की राष्ट्रीय स्तर की अच्छी खिलाड़ी थीं और हमेशा **मेहनत करती थीं**।

एक दिन उनके जीवन में बहुत बड़ा दुख आया। वर्ष 2011 में वे ट्रेन से यात्रा कर रही थीं। कुछ बदमाशों ने उनका सामान छीनने की कोशिश की। जब अरुणिमा ने विरोध किया, तो उन्हें चलती ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया। दूसरी पटरी पर आती ट्रेन से उनका एक पैर बुरी तरह घायल हो गया और डॉक्टरों को उनका पैर काटना पड़ा।

मुश्किलें हमें रोकने नहीं, मजबूत बनाने आती हैं।"

यह घटना किसी को भी तोड़ सकती थी, लेकिन **अरूणिमा सिन्हा** ने हार नहीं मानी। अस्पताल में लेटे-लेटे उन्होंने एक बड़ा सपना देखा — दुनिया की सबसे ऊँची चोटी Mount Everest पर चढ़ने का।

लोगों ने कहा कि यह असंभव है, लेकिन अरुणिमा ने अपने साहस और मेहनत से सबको गलत साबित कर दिया। कृत्रिम पैर के सहारे उन्होंने कठिन प्रशिक्षण लिया। कई बार दर्द हुआ, कई मुश्किलें आईं, फिर भी वे आगे बढ़ती रहीं।

"अगर सपना बड़ा हो, तो मेहनत भी बड़ी करनी पड़ती है।"

आखिरकार वर्ष 2013 में **अरूणिमा सिन्हा** ने Mount Everest पर तिरंगा फहराकर इतिहास रच दिया। वे दुनिया की पहली महिला दिव्यांग पर्वतारोही बनीं जिन्होंने यह महान काम किया।

हार वही मानता है, जो कोशिश करना छोड़ देता है।"

अरुणिमा जी का जीवन हमें सिखाता है कि इंसान की सबसे बड़ी ताकत उसका हौसला होता है। यदि मन में विश्वास हो, तो कोई भी कठिनाई हमें रोक नहीं सकती।

बच्चों, हमें भी अरुणिमा सिन्हा जी की तरह साहसी बनना चाहिए। जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाई आए, हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए और अपने सपनों के लिए लगातार मेहनत करनी चाहिए।